Rama Aparadhakshamapana Stotram Sartham

रमाऽपराधक्षमापनस्तोत्रं सार्थम्

Document Information

Text title : Rama Aparadhakshamapana Stotram

File name : ramAparAdhakShamApanastotram.itx

Category : devii, lakShmI

Location : doc_devii

Author : Kaushalendra Krishna

Acknowledge-Permission: Shri Kaushalendra Krishna, https://aacharyashri.in/

Latest update : November 27, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 27, 2023

sanskritdocuments.org

रमाऽपराधक्षमापनस्तोत्रं सार्थम्

कमलयमलचक्षुं यामलैर्वारणानां
महितचरणयुग्मं शुभ्रशोभां शुभाङ्गीम् ।
अतिललितकटाक्षो भूतयः सेवकानां
कलितकुमुदमध्येऽधिष्ठितां तान्नमामि ॥ १॥

सहस्रैर्वर्षैर्वा विविधविबुधैर्वाऽथ मुनिभिः
तवैश्वर्यं सर्वं निगमकुलमन्त्रैश्च विदितैः ।
कथं जाने क्वियंस्तव महिमदिव्यं हरिप्रिये
परं जाने पद्मां विभवति नतो नैव च भयम् ॥ २॥

अहम्मत्या लोके न तव परिचर्या विधितया
कृतोऽहं तुण्डेन न च विषयकुण्डेन वपुसा ।
न त्वत् क्षन्तुं वेथे जड इव धिया लोकजननि
तथाऽऽशंसे ज्ञात्वा क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३॥

कटाक्षेनास्यात्तद्विलसितसुरभ्यक्षहननो
विमुक्तोऽनुक्तो यत्तुरगमुखयुक्तो वियमितः ।
जगन्मुग्धे शक्तिस्तव निरुपमा विश्वजननि
रतिं मे पद्माक्षीपदनलिनयोश्चैव कुरुताम् ॥ ४॥

न जिष्णोरैश्वर्यो जडभरतवद्भक्तिरबलो
न तेषां लेशांशो गजवरदवृन्दारकप्रिये ।
न दातव्यं देवि मयि विकटकल्कं स्वपदयो-
र्गृहीत्वा मृद्वीतादधमगतिगीतेन मुदिता ॥ ५॥

यथा माता हस्तौ विषमनिधिव्यस्तौ स्वतरसा
शिशोर्क्रष्ट्रीं रूपं त्वयि सुगमभावैरिव धरे ।
अनुज्ञातुं नेच्छा तदपि अयि पाथोजवदने
रतिं मे पद्माक्षीपदनलिनयोश्चैव कुरुताम् ॥ ६॥

अहं जाने मातर्द्रवगुणगणैर्यत्र शिशुने
प्रसूस्तस्याभीष्टमवधरति गुप्तं स्मितमुखा ।
ममोन्नत्यर्थे त्वं किमपि इह कर्तुं प्रतिरता
जगन्मातश्चाहं यदपि तव पुत्रोऽस्मि भुवने ॥ ७॥

जगत्सत्यं वेदमनृतमिति गुञ्जन्ति कविभिः
प्रजाभ्योऽहं जाने चरणनखदीप्त्यै प्रतिगतः ।
गतोऽहं त्वत् सेवाविधिनिधिमधीत्योन्नतिमिति
परं नैवापेक्षा किमपि शुभितोऽस्मान्न निखिले ॥ ८॥

त्वदुत्पन्नास्तृप्ता विधिगिरिशदक्षावुपवृषा
नियुक्तास्तत्रैवाखिलजगतकृत्येषु गुणतः ।
पराशक्तेः रूपं किमिह विदितं नास्ति कमले
मया मन्ये मातर्मम निखिलरूपां त्वमिति च ॥ ९॥

रमां प्राप्तुं शीयञ्छविरजितरूपोऽमरसुर-
द्विषोः सङ्ग्रामेण पृथुकमठरूपेण जुगुरे ।
तदा लब्ध्वा दीप्तो न च महिमलिप्तस्तव सुत-
स्तथाऽतो मूर्तस्त्वं मम प्रति न चैतावदवतु ॥ १०॥

नेच्छामि सर्वविभवाश्च यतस्तु तेषां
सानिध्ययोगगतनिष्ठुरतां च दृष्ट्वा ।
धीरैर्धनैर्भुजबलैः कृतवन्दनेन
यत्नेन वा न च समेति सुरेन्द्रपूज्ये ॥ ११॥

वासितासु पृथुकेषु जन्तुषु
स्थावरेषु च चरेषु सर्वथा ।
दर्शनं तव सदैव प्रेक्षय
प्रत्ययेऽखिलविपर्ययोदरि ॥ १२॥

मयैतत्कथितं सर्वं भावं हृदयगोचरम् ।
अतो भवतु हे देवि प्रसन्नो मयि सर्वदा ॥ १३॥

स्तुतावप्यत्र हे देवि बहवः त्रुटयः कृताः ।
तत्सर्वं क्षम्यतां मातः सदैव इव बालिशः ॥ १४॥

अम्बिकेऽहं महद्व्याप्यस्त्वमेवाघहरे परे ।
कोपात्त्वन्नास्ति गन्तव्यं तदेच्छसि तथा कुरु ॥ १५॥

॥ इत्याचार्यश्रीकौशलेन्द्रकृष्णशर्मणा विरचितं श्रीरमाऽपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ -
जिनके कमल की दो कर्णिकाओं जैसे नयन हैं । जिनके चरण गजयुग्मों द्वारा सदा पूजित है । जो शुभ तथा शुभ्र शोभित अङ्गों वालीं हैं । जिनका अत्यन्त सुन्दर कटाक्ष ही उनके सेवकों का परम धन है, सुन्दर कमल के मध्य में बैठीं उन देवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १॥

हजारों वर्षों में देवताओं के माध्यम से या मुनियों के द्वारा, वेदों के मन्त्रादि के द्वारा आपका ऐश्वर्य को ही गाया गया है । मुझ जैसा (माया से) पीडित हो रहा उस दिव्य महिमा को कैसे जानेगा? हे विष्णु की प्रिया! मैं तो यही जानता हूँ कि जो आपके चरणों के द्वारा पाले गये, उन चरणों के समक्ष झुके मानव हेतु भय नहीं है ॥ २॥

अहङ्कार के कारण इस लोक में मैंने न मुख (वाणी) से और न तो विषयों के समुद्र, इस देह से तुम्हारी सेवा विधिपूर्वक की । न ही मैने अपनी जड जैसी बुद्धि से क्षमा हेतु तुमसे याचना ही की । तब भी हे जगतजननि! कभी भी कुमाता नहीं होती, यह जानकर मैं (क्षमा की) आशा कर रहा हूँ ॥ ३॥

आपके दृष्टिपात मात्र से विलसित कमल के समान नेत्र वाले भगवान् विष्णु का शरीर मस्तक से हीन हो गया । ऐसी उनकी स्थिति कौन जानता है जब वे परवश होकर घोड़े के मुख वाले हो गए थे । हे विश्व को वशीभूत करने वाली! आपकी शक्ति निरुपम है । हे जगज्जननि! आप स्वयं के चरणों में मेरी प्रीति उत्पन्न करें ॥ ४॥

न ही मेरे पास इन्द्र सा ऐश्वर्य है, न ही मुझ बलहीन में जडभरत के जैसी भक्ति ही है । गज पर कृपा करने वाले देव की प्रिया! न तो मेरे पास इन सबका लेशमात्र भी विद्यमान है । मुझमें आपको देने योग्य कुछ नहीं । मुझ अधम की बुद्धि से निःसृत इस गीत से प्रसन्न होकर मेरे इस विकट किल्बिष को अपने चरणों पर ग्रहण करके इसे कुचल डालिये ॥ ५॥

जैसे माता अपने शिशु के अनुचित कार्यों में पड़े हुए हाथों को बलात् खीञ्च लेती है, इसी रूप को मैं सुगम भाव से आपपर धारण करता हूँ । यदि इसे स्वीकारने की आपके मन में इच्छा न हो तो भी हे कमल के समान मृदुल देह वाली! आप स्वयं के चरणकमलों में मेरी प्रीति उत्पन्न कर दें ॥ ६॥

हे माता! मैं एक बात जानता हूँ कि जहाँ एक जननि खेलने की इच्छा से अपने पुत्र के इच्छित वस्तु को छुपाकर हँसती रहती है, वैसे ही आप भी खेल रहीं हैं । आप मेरी उन्नति के लिये कुछ

भी करेङ्गी क्योङ्कि जो भी हो, आखिर इस संसार में मैं भी तो आपका पुत्र ही हूँ ॥ ७॥

यह संसार सत्य है या असत्य है, इस प्रकार ज्ञानियों द्वारा प्रजा हेतु नित्य कहा जाता है । किन्तु मैं आपके चरण के नख की दीप्ति पर समर्पित भाव रखकर आपसे आपकी सेवाविधि की शिक्षा ही चाहता हूँ । उसीसे मेरी उन्नति है । इसके अतिरिक्त मुझे और कोई अपेक्षा नहीं । क्या इस संसार में कोई इसी (सेवासंलग्नता) मात्र से शोभित नहीं हो सकता? ॥ ८॥

आपसे ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न होते तथा पोषित, हर्षित होते हैं । वे आपके द्वारा वहीं अपने गुणों के अनुरूप संसार के कृत्यों हेतु नियुक्त किये गए हैं । हे कमला! मेरे द्वारा आप पराशक्ति का रूप कैसा है, यह जाना नहीं गया । हे माता! मैं तो यही मानता हूँ कि आपका यही रूप (आपका कमला स्वरूप) मेरा सर्वस्व है ॥ ९॥

रमा को प्राप्त करने हेतु मुरझाती छवि वाले अजित (विष्णु) ने देवता तथा असुरों के युद्ध से तथा विशाल कछुआ बनकर तुम्हे प्राप्त करने का प्रयत्न किया, तब तुम्हे प्राप्त करके शोभित हो पाए । किन्तु तुम्हारा यह पुत्र तो भगवान् विष्णु सम महिमा वाला नहीं है, अतः तुम मेरे प्रति ऐसी निष्ठुर न बनो ॥ १०॥

मैं ऐश्वर्यों की उपलब्धि से आपकी प्राप्ति में होने वाली कठिनाइयों को देखकर किसी भी ऐश्वर्य की कामना नहीं करता । हे इन्द्र की पूज्या! बुद्धि से, धन से या बल आदि से किये गए पूजन से या अन्य युक्तियों से भी आपकी प्राप्ति सम्भव नहीं ॥ ११॥

हे कारण स्वरूपिणी! विश्वप्रपञ्च की जननी! स्त्रियों में, बालकों में, जन्तुओं में, स्थावरों तथा जङ्गमों में हर प्रकार से मुझे आप स्वयं का ही दर्शन कराएं ॥ १२॥

मेरे द्वारा यहाँ मेरे हृदय में आए सारे भाव कहे गए हैं । अतः हे देवि! आप मुझपर प्रसन्न हो जाइये ॥ १३॥

यहाँ आपकी स्तुति में भी मैने बहुत सी त्रुटियाँ कर ही दीं हैं । उन सबके लिये आप मुझे बालक समझकर सदैव क्षमा करें ॥ १४॥

हे माता! मैं बड़ा निकृष्ट हूँ और आप सबसे बड़ी पापनाशक हैं । आप कोप करेङ्गी तो मैं कहाँ जाउङ्गा? तब भी आपको जैसा लगे आप वैसा करें ॥ १५॥

इस प्रकार आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण जी द्वारा रचित रमा अपराध क्षमापन स्तोत्र समाप्त हुआ ।

(1) Who has eyes like two lotus leaves. Whose feet are always worshiped by elephant couples. Which is auspicious and has white parts. Being seen by her is the ultimate wealth of his servants. I bow to that goddess sitting in the middle of a beautiful lotus.

(2) For thousands of years, your majesty has been sung through the gods and sages and through the mantras of the Vedas. How will a person like me, suffering from your illusions know that divine glory? O beloved of Vishnu! All I know is that there is no fear for those who have nourished by your feet and for those human beings who have bowed before those feet.

(3) Due to ego, I neither served you properly in this world with my mouth
(speech) nor with this body which is an ocean of subjects to be grasped. Nor did I even appeal to you for forgiveness with my dull mind. Even then O mother of the world! Knowing that there is never a bad mother, I am hoping (for forgiveness).

(4) Just by your glance, the body of Lord Vishnu, who had eyes like a blossoming lotus, became inferior to his head. Who knows their condition when they were forced to become horse-faced? O one who subjugates the world! Your power is limitless. O mother of this whole world! Please generate my love at your feet.

(5) I do not have the opulence like the king of the gods. Nor do I, powerless, have the devotion like Jadbharata son of Rishabhadeva. O Beloved of the God who blesses the Elephant king! Neither do I have even a little of all this. There is nothing in me worth giving you. Pleased with this song emanating from my wretched mind, accept these dreadful impurities of mine at your feet and crush them.

(6) Just as a mother forcibly pulls out the hands of her child engaged in wrongdoing, I assume this form on you with ease. Even if you have no desire to accept it, O one with a body as soft as a lotus! You generate love for me in your own lotus feet.

(7) Hey mother! I know one thing that a mother keeps laughing while hiding the desired object of her son out of desire to play, you too are playing in the same way. You will do anything for my progress because whatever, after all I am also your son in this world.

(8) Whether this world is true or false, this is what the wise people say daily to the people. But I want to learn from you about your method of service by keeping my devotion towards the shine of your toenails. That will be my progress. Apart from this I have no other expectations to understand. Can’t anyone in this world become beautiful just by this
(engagement in service for you)?

(9) It is from you that Brahma, Vishnu and Shiva are born and become nourished and happy. They have been appointed by you for the activities of the world according to their qualities. O Kamla

(Goddess of lotuses)! I have not been able to understand the form of you Parashakti (Supreme Power). Hey mother! I believe that this form of yours (your laxmi form) is my everything.

(10) In order to get Rama, Ajit

(Vishnu) with withering image tried to get you through the war between gods and demons and by becoming a huge tortoise, only then he became beautiful after getting you. But this son of yours is not as glorious as Lord Vishnu, hence do not be so cruel towards me.

(11) I do not wish for any opulence, seeing the difficulties that arise in wishing for attainment of opulences. O worshiped by the king of gods! Your attainment is not possible through worship done through intelligence, money or force etc. or even through other

(these types of) methods.

(12) O the form of reason of the world! Mother of the whole world! May you continue to show me yourself in every way. in women, in children, in animals, in the immovable and the movable beings.

(13) I have expressed here all the feelings that came to my heart. So O Goddess! You become happy for me.

(14) I have made many mistakes in praising you here also. For all those things, consider me as a child and always forgive me.

(15) Hey mother! I am very bad and you are the biggest destroyer of sins. If you get angry, where will I go? Even then, you do as you feel.

In this way, the Rama Aparadha Kshamapana Stotra written by Acharyashri Kaushalendrakrishna ended.

Rama Aparadhakshamapana Stotram Sartham

pdf was typeset on November 27, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*